नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ..... दिनांक : 18.08.2019

प्रकाशनार्थ

भारत की न्याय व्यवस्था अनेक चुनौतियों के बावजूद दुनिया की श्रेष्ठम न्याय व्यवस्था है। किन्तु यह न्याय व्यवस्था अंग्रेजो द्वारा बनायी गयी न्याय व्यवस्था है जो भारत की तासीर से मेल नही खाती। भारतीय संस्कृति, भारत के मौलिक स्वभाव के अनुरूप और भारतीय जनता को न्याय दिलाने के लिए नहीं अपितु अंग्रेजी शासक वर्ग द्वारा भारतीयों पर शासन करने के लिए यह न्याय व्यवस्था बनायी गयी थी। दुर्भाग्य वश आजाद भारत में आज तक हम बिना किसी बड़े सुधार एवं मौलिक परिवर्तन के यह न्याय व्यवस्था स्वीकार किए हुए है। परिणामतः भारत की न्याय व्यवस्था भारतीय जनता का विश्वास नहीं जीत पायी। भारतीय न्याय व्यवस्था को भारतीय जनता का विश्वास जीतना एक बड़ी चुनौती है और इसके लिए **भारतीय संस्कृति, भारतीय जीवन मूल्य, भारतीय स्वभाव के अनुरुप न्याय व्यवस्था को ढलना होगा।** धर्म अर्थात कर्तव्यबोध को महत्त्व देते हुए शीघ्र अर्थात समयबद्ध न्याय देने के सिद्धान्त का पालन करना होगा। उक्त बाते महाराणा प्रातप पी0जी0 कालेज जंगल धूसड़ गोरखपुर में **ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ की पचासवीं, एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी की पॉचवीं पुण्यतिथि** पर आयोजित साप्ताहिक व्याख्यान–माला के तीसरे दिन **'भारत की आपराधिक न्याय व्यवस्था'** विषय पर बोलते हुए **सी0बी0आई0 नई दिल्ली के लोक अभियोजन श्री विजय कृष्ण पाठक** ने कही।

श्री विजय कृष्ण पाठक ने आगे कहा कि भारत धर्म–अध्यात्म प्रधान देश है। यहॉ धर्माधारित आचरण–व्यवहार से कर्त्तव्यबोध निहित हैं। हम यदि भारतीय जनता में इसी कर्तव्यबोध को जाग्रत कर दें तो आपराधिक घटनाओं पर प्रभावी ढंग से विजय पायी जा सकती है। क्योंकि अपराध करने वाला, अपराध से प्रभावित होने वाला, अपराधी को दण्डित करने वाला और अपराधी को बचाने वाला सभी समाज के ही अंग है। भारत अपनी सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों के बल पर स्वस्थ समाज का वाहक रहा हैं, यहॉ अपराध के समाज नियन्त्रित करता रहा है। कुछ न्यायपालिकाएँ, कुछ न्यायाधीश और वर्तमान पुलिस के बल पर अपराध रोकना कठिन है और फिर वास्तविक न्याय देना तो और भी कठिन है। हमें भारतीय समाज और संकृति के आलोक में पहले अपराधों पर प्रभावी नियन्त्रण करना होगा, तब फिर होने वाले कुछ अपराधों में न्याय दिला पाना सम्भव होगा।

श्री पाठक ने कहा कि जिस देश में तीन करोड़ मुकदमें पेन्डिग हो, प्रतिदिन नए हजारों मुकदमें दाखिल हो रहे हों, वहॉ एक जिलान्यायालय, प्रदेश में एक उच्च न्यायालय और देश में एक सर्वोच्च न्यायालय के भरोसे न्याय की उम्मीद बेमानी होगी। हमें न्याय व्यवस्था में सुधार हेतु पुलिस प्रशासन में मौलिक सुधार करना होगा, पुलिस में जाँच हेतु अलग विग बनानी होगी, न्यायालयो– न्यायाधीशों की संख्या और अपराध एवं जनसंख्या का अनुपात ठीक करना होगा।

पुलिस प्रशासन में मौलिक सुधार करना होगा। उच्च न्यायालय में अलग आपराधिक डिविजन बनाना होगा। कानून की जटिलताओं को समाप्त कर सामान्य जनता की समझ के अनुरुप बनाना होगा और अधिवक्ता रूपी मध्यस्थ की भूमिका न्यूनतम करनी होगी।

उन्होंने आगे कहा कि न्यायिक सुधार तो स्वयं हो रहे है इसके साथ ही प्रशासनिक सुधार पुलिस सुधार अत्यन्त आवश्यक है। नैतिकता प्रशासनिक सुचिता की रीढ़ होनी चाहिए। न्यायिक सुधार को अब विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के स्थान पर विधि की उचित प्रक्रिया के तरफ बढ़ना चाहिए। बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर भी इसी को और बढ़ाना चाहते थे ताकि प्राकृतिक न्याय की अवधारणा को और बढाया जाय। सम्भवतः पीआईएल भी इसी की परिणित है। आवश्यकता है सीआरपीसी, आईपीसी एवं एविडेन्स में सुधार की जानी चाहिए। सामाजिक मूल्यों को बनाये रखने के लिए आपराधिक न्याय की आवश्यकता होती है। भारतीय संस्कृति के अनुरुप आपराधिक न्याय व्यवस्था बनाये जाने की आवश्यकता है।

इससे पूर्व व्याख्यान कार्यक्रम में महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की प्रवक्ता **कविता मंध्यान्** ने **"इमर्सन एण्ड हिज हिन्दू फिलास्फी"** विषय पर बोलते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान दर्शन से पूरा विश्व आच्छादित होता रहा है। भारत के साहित्य से पाश्चत्य देश के लोगों ने भी बहुत कुछ सीखने का प्रयास किया। अमेरिकी साहित्यकार इमर्सन ने हिन्दू फिलास्फी को आधार बनाते हुए वेद, गीता, उपनिषद, पुराण इत्यादि भारत के महान ग्रन्थों के अनेक मूल्यों को अपनी रचनाओं में सम्मलित करते हुए जीवन जीने के मार्ग का उल्लेख किया। उन्होंने अपनी ब्रह्मा, ओबर सोल, नेचर जैसी रचनाओं के माध्यम से हिन्दू दर्शन को जीवन दर्शन के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज पर पुष्पांजलि एवं माँ सरस्वती की अराधना के साथ हुआ। समापन वन्देमातरम् से किया गया। आभार ज्ञापन डॉ0 कृष्ण कुमार एवं संचालन नवनीत सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रो0 महेश शरण, मनोज प्रताप चन्द्र, डॉ0 प्रसुन मल्ल, दीपक शाही, बलवन्त सिंह, मुनीवर चन्द सहित महाविद्यालय शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(डॉ0 राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी